Naveen Shodh Sansar (An International Refereed/ Peer Review Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 7.671
January to March 2023, E-Journal, Vol. I, Issue XLI

महिलाओं में राजनीतिक अधिकार के प्रति जागरूकता

डॉ. वर्षा सागोरकर* रजीना खान**

* प्राध्यापक (राजनीति विज्ञान) शासकीय हमीदिया कला-वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत
** शोधार्थी, शासकीय हमीदिया कला-वाणिज्य महाविद्यालय, भोपाल व बरकतउल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल (म.प्र.) भारत

शब्द कुंजी – लैंगिक असमानता, लोकतांत्रिक मूल्य, संवैधानिक अधिकार।

प्रस्तावना – किसी भी व्यक्ति की राजनीतिक जागरूकता से तात्पर्य राजनीतिक परिदृश्य के बारे में उसके ज्ञान से है। यह राजनीतिक संस्थाओं व प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी के साथ राजनीतिक व्यवस्था के प्रति समझ को प्रदर्शित करता है। यह वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से व्यक्ति राजनीतिक व्यवस्था के मूल्यों के प्रति चेतना विकसित करते हैं, उनमें रुचि लेते है। राजनीतिक जागरूकता का स्तर उच्च होना किसी भी देश के लोकतंत्र के सफल संचालन में दूरगामी बेहतर नतीजों का द्योतक है। भारत में लोकतांत्रिक मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता के फलस्वरूप स्त्री-पुरूष समानता के प्रावधान है। महिला-पुरूष समानता के सिद्धांत को कानूनी मान्यता के बावजूद भी आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक क्षेत्रों में महिलाओं की भागीदारी कम है। 20वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में महिलाओं की क्रियाशीलता सार्वजनिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में कम थी। भारत में महिलाओं को मताधिकार के उपरांत महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता की स्थिति में परिवर्तन हुआ तथा भारत में राजनीतिक क्षेत्र में कुछ ही महिलाएँ सक्रिय हुई। महिलाओं की राजनीतिक क्षेत्र में रुचि एवं सहभागिता बढ़ाने में भारतीय महिला संघ, भारतीय महिलाओं की राष्ट्रीय परिषद तथा अखिल भारतीय सम्मेलन की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इन संघों की ऐतिहासिक शुरूआत ने महिला मुद्दों को व्यापक राष्ट्रवादी स्वरूप प्रदान किया।

विश्व के अधिकांश देशों में राजनीति में महिलाओं की सहभागिता कम ही है। महिलाएं विश्व की आबादी का आधा हिस्सा है इसके बावजूद भी विभिन्न देशों की संसद में महिला प्रतिनिधित्व मात्र -प्रतिषत है। विश्व के सभी देशों में महिलाओं को वैधानिक राजनीतिक अधिकार प्राप्त है लेकिन राजनीति में भी लैंगिक असमानता व्याप्त है। विश्व स्तर पर राजनीति में महिला सहभागिता कम है। विश्व में स्वीडन, अर्जेन्टीना तथा रवांडा में महिला की राजनीतिक सहभागिता उच्च स्तर की है। संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के अनुसार विकसित राष्ट्रों में संयुक्त राज्य अमेरिका, अर्जेन्टीना आदि देशों के अपेक्षा अन्य देशों में महिलाओं की सहभागिता अत्यंत कम है। स्वाभाविक है। ऐसी स्थिति में भारत के लोकतंत्र में महिलाओं की सहभागिता बेहतर और मजबूत होना चाहिए लेकिन आंकड़े बताते है कि देश की जनसंख्या में महिलाओं की संख्या की अपेक्षा राजनीतिक क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी कमी कम आंकी जा रही है। ऐसे कौन से कारण है जिससे महिलाओं को राजनीतिक अधिकार के उपरांत भी इस क्षेत्र में आगे बढ़ने से रोक रहे है। जागरूकता की कमी या देश का वर्तमान परिदृश्य या अन्य कोई कारण? मध्यप्रदेश का छिंदवाड़ा जिला क्षेत्रफल की दृष्टि से एक बड़ा तथा आदिवासी बाहुल्य होने के साथ-साथ राजनीतिक दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील माना जाता रहा है। भारतीय जनता पार्टी एवं कांग्रेस दोनों राजनीतिक दलों के लिए यह जिला एक प्रतिष्ठा का क्षेत्र माना जाता रहा है और इस क्षेत्र के निवासी में राजनीतिक जागरूकता का स्तर अधिक होना सहज जो सकता है।

महिलाओं की राजनीतिक जागरूकता के लिए आवश्यक सुझाव

1. महिलाओं के उत्थान के लिए आवश्यक है कि उनकी भारत जैसे लोकतांत्रिक राष्ट्र में राजनीतिक भागीदारी अधिक हो और इसके स्त्री शिक्षा को अधिक महत्व दिया और और उनके संवैधानिक राजनीतिक अधिकारों के प्रति जागरूक किया जाये और राजनीति में समान अवसर उपलब्ध कराये जाये जिससे उन्हें राजनीति में आकर महिला उत्थान के साथ देश के विकास में अपना सहयोग देने का अवसर मिले।
2. अध्ययन के आंकड़ों पर देखा जाये तो महिलाओं की राजनीति में रुचि का प्रतिशत अत्यंत ही कम है जबकि देश में महिलाओं की संख्या को किसी भी स्थिति में नजर अंदाज नहीं किया जा सकता और महिलाओं का अनदेखा करते हुए कोई भी राजनीतिक दल अपनी सरकार नहीं बना सकता है ऐसी स्थिति में राजनीति में सक्रिय भागीदारी के लिए राजनैतिक दलों को महिलाओं को प्रोत्साहित करते हुए सभी चुनावों में महिलाओं को यथासंभव टिकट देना चाहिए।
3. भारत के परिवारों में भलेंहि पुरूषों की प्रधानता हो लेकिन मतदान जैसे अहम् फैसलों पर महिलाओं को स्वयं निर्णय लेने के लिए स्वतंत्र छोड़ा